Impact Factor – 7.367

ISSN-2349-638x

J-23

# Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

## Special Issue No.122

## Contribution of women in Indian freedom struggle

**Chief Editor**

Dr.Pramod P. Tandale

**Executive Editor**

Dr. Kranti Vithalrao More

**IMPACT FACTOR**

**SJIF 7.367**

**For details Visit our website**

www.aiirjournal.com

| Sr. No. | Name of the Author | Title of Paper | Page No. |
|---|---|---|---|
| 45. | *प्रा.डॉ. अर्जुन शंकरराव कसबे* | भारतीय संविधान के निर्माण में भी स्वतंत्रता सेनानी महिलाओं का योगदान | 145 |
| 46. | डॉ.छाया कडेकर | स्वतंत्रता आंदोलन में क्रांतिकारी महिला | 149 |
| 47. | डॉ. जाधव दत्ता उध्दव | भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में वीरांगना झलकारीबाई का योगदान | 152 |
| 48. | डॉ. देवानंद सखाराम अंभोरे | स्वतंत्रता संग्राम में महिला नायिकाओं की भूमिका : एक अध्ययन | 155 |
| 49. | डॉ. गौस शेख | भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका | 160 |
| 50. | प्रा. नयन भादुले-राजमाने | भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मे महिलाओं की भूमिका | 164 |
| 51. | डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी | स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी साहित्यकारों का योगदान | 167 |
| 52. | डॉ. सूर्यकांत पवार | भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान | 171 |
| 53. | डॉ.सतीश अर्जुन घोरपडे | भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का योगदान सुभद्राकुमारी चौहान के विशेष संदर्भ में | 177 |
| 54. | डॉ. हांगे अरुण केशवराव | भारतीय संविधान निर्मिती आणि महिलांचे योगदान | 181 |
| 55. | प्रा. मोटे अशोक अर्जुनराव | भारताच्या स्वातंत्र्यलढ्यातील रणरागिणींचे योगदान | 185 |
| 56. | डॉ.खोकले आर.के | भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामात आदिवासी स्त्रीयांचे योगदान | 188 |
| 57. | प्रा. तौसीफ सरदारखान पठाण | भारतीय स्वातंत्र्य चळवळीतील मुस्लिम महिलांची भूमिका व योगदान | 193 |
| 58. | डॉ. मोरे संगीता दत्ताजी | भारतीय स्वातंत्र्य लढ्यात सरोजिनी नायडू यांचे योगदान | 198 |
| 59. | प्रा.डॉ. शैलजा भारतराव बरुरे | भारतीय स्वातंत्र्यलढा आणि सरोजिनी नायडू यांचे योगदान | 201 |
| 60. | डॉ. अपर्णा श्रीकांत पसारकर | भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामात स्त्रीयांचे योगदान | 206 |

# भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मे महिलाओं की भूमिका

- प्रा. नयन भादुले-राजमाने,
लातूर.

प्राचीन समय से ही विदेशी हमलावर हमेशा भारत आने को उत्सुक रहे हैं, फिर चाहे वो आर्य, फारसी, ईरानी, मुगल, चंगेज खान, मंगोलियाई या सिकंदर ही क्यों ना हों। अपनी समृद्धि और खुशहाली के कारण भारत हमेशा से आक्रमणकारियों और शासकों की रुचि का कारण रहा।

1757 में पलासी के युद्ध के बाद ब्रिटिश भारत में राजनीतिक सत्ता जीत गए और यही वो समय था जब अंग्रेज भारत आए और करीब 200 साल तक राज किया। उत्तर-पश्चिमी भारत अंग्रेजों के निशाने पर सबसे पहले रहा और 1856 तक उन्होंने अपना मजबूत अधिकार स्थापित कर लिया।

अंग्रेजों ने कसे सिकंजे से छुटकारा पाने के लिए भारतीय स्वातंत्रता आंदोलन में महिलाओं ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध कदम उठाए तथा वीरता और नेतृत्व की क्षमता का अभूतपूर्व परिचय दिया। भले ही माना जाता है कि 1857 की क्रांति के बाद हिंदुस्तान की धरती पर हो रहे परिवर्तनों ने जहॉ एक और नवजागरण की जमीन तयार की, वहीं विभिन्न सुधार आंदोलनों और आधुनिक मूल्यों और रोशनी में रूढ़ीवादी मूल्य टूट रहे थे। स्त्रियों की दुनिया विस्तार पाते हुए चूल्हे-चौके से बाहर नए आकाश को छूने की तमन्ना लिए थी।

फिर भी हम नहीं भूल सकते लगभग 164 वर्ष तक चित्तूर कर्नाटक में एक छोटी-सी रियासत की राजधानी रहा। यहॉ कि रानी चेन्नमा भारत में किसी ऐसी रियासत की प्रथम राज्याध्यक्ष थीं जिन्होंने शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध आवाज उठाई थीं। रानी चेन्नमा अदम्य साहसी और देशभक्ति से प्रेरित नारी थीं। उनका जीवन एक प्रेरणादायक कहानी है।

मल्लसर्जा का शासनकाल कित्तूर के शासकों में सबसे अधिक घटना पूर्ण और शानदार रहा हैं। यह काल कित्तूर के इतिहास में सबसे अधिक कठिन भी था। उन्होंने कित्तूर राज्य पर लगभग 34 वर्ष शासन किया। उन्होंने कित्तूर के मुखियों में सबसे अधिक प्रसिद्धी भी पाई। मल्लसर्जा की दो पत्नियॉ थी- रुद्रम्मा और चेन्नम्मा।

राणी चेन्नम्मा राज्य कौशल्य में गहरी रूचि लेती थीं। वह अन्याय और क्रूरता को सहन नहीं कर सकती थीं। इसी गुण के कारण वह अपने पति और जनता की प्रिय बन गई थीं। वह राज्य चलाने में अपने पति की मदत करने लगीं जो मराठों और अंग्रेजों की दो विरोधी शक्तियों के बीच निरंतर संघर्ष में हो रहा था। वह सभी अभियानों और युद्धों में राजा मल्लसर्जा के साथ जाती थीं। वह हर दृष्टी से अपने पति की मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक थीं। अत: पति की मृत्यु के बाद राजनीतिक शक्ति सहज ही उनके पास आ गई।चेन्नमाने बिना किसी कठिनाई के राज्य के कार्यों को अपने नियंत्रण में लिया। वह राजनीतिक क्षेत्र में सभी हलचलों और गतिविधियों को बारिकी से देखते थीं और उनका अध्ययन करती थीं। वह बुद्धिमान थीं। साहस और दूरदर्शिता की प्रतिभा से संपन्न थीं। वह जनता से स्नेह करती थीं। उनसे खुले मिलती-जुलती थीं। वह उनकी समस्यायाओं और तकलिफों को जानती थीं। तत्काल निर्णय लेने की क्षमता उमेश थीं। मल्लसर्जा के मृत्यु के बाद आठ वर्ष तक केवळ नाम के प्रधान के रूप मे शिवलिंग रुद्र सर्जा प्रधान रहें। राज्य की नौका तो चेन्नम्मा ने ही सुचारू रूप से सॅभाली। आगे जाकर शिवलिंग सर्जा के प्रकृति अस्वस्थता के कारण दत्तक पुत्र लेने की बात चलीं। जिसे अंग्रेजों ने बहोत ज्यादा चालाकी से नकारा। लेकिन चेन्नम्मा ने उनके गलत इरादे का विरोध किया। उन्हें बताया कि कित्तूर हमारा है। हम अपने इलाके के स्वयं मालिक है। पुत्र को दत्तक लेने के लिए हमें उनकी इजाजत लेने की जरूरत नहीं है। हम श्री. थैकरे और चैपलिन से कहते है कि हम झुकेंगे नहीं चाहे कुछ भी परिणाम पड़ें। कित्तूर अपनी धरती पर अंतिम क्षण तक लढ़ाई लढ़ेगा। वे अंग्रेजों के गुलाम होने के बजाये अपने प्राण दे देगें। रानी चेन्नम्मा के इस प्रेरणादायक भाषण से जोश की लहर दौड़ गई। कित्तूर में सिपाहियों की तलवारें चमकने लगीं। एक स्वर

आवाज गूंज उठी-'कित्तूर अमर रहें', 'रानी चेन्नम्मा जिंदाबाद!'

ब्रिटिश सिपाहियों से डटकर मुकाबला करते हुए उस रात कित्तूर में चारों तरफ उल्लास छाया हुआ था। राजमहल, किले और शहर में विजयोत्सव मनाये जा रहे थे। किले के प्राचीरें जगमगा रहीं थी। महान विजयी घोषणा करते हुए बिगुलों की ध्वनि किले की प्राचारों में गूंज रही थी। कित्तूर के बहादुर सिपाहियों ने शक्तिशाली अंग्रेजों के साथ अपनी लढ़ाई में महान विजय प्राप्त की थी और उन्हे पूरी तरह परास्त कर दिया था। यह रानी चेन्नम्मा के मार्गदर्शन पर हो पाया था। वह स्वयं वहॉ पर लढ़ाई रही थी।कर्नाटक के इतिहास में ही नहीं बल्की भारत के स्वातंत्र्य संग्राम के इतिहास में यह एक स्वर्ण दिवस था।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान देने वाली रानी लक्ष्मीबाई 1857 के भारतीय विद्रोह में एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थीं।वह साहस और वीरता की प्रतिक थी। 19 नवंबर 1835 को वाराणसी शहर में जन्मी मणिकर्णिका तांबे उपनाम मनु से पहचानी जाने लगी। बचपन से ही पुरुषों के साथ ही खेलना- कूदना, तीर- तलवार चलाना, घुड़ सवारी करना आदि के कारण पुरुषों की तरह गुणों का विकास हो गया। सात साल के उम्र में ही उनका विवाह झांसी के अंतिम पेशवा राजा गंगाधर राव से के साथ हुआ था। शादी के बाद लक्ष्मीबाई के नाम से पहचाने जाने लगी। उन्होंने एक पुत्र को जन्म दिया परंतु तीन माह के बाद वह चल बसा। पुत्र वियोग मे गंगाधर राव बीमार पड़ गए।तब उन्होंने दामोदर राव को गोद ले लिया। लेकिन कुछ समय बाद वे भी गुजर गए। उनकी मृत्यु के बाद झॉशी की राणी लक्ष्मीबाई को अंग्रेजों के गलत इरादों से झूंझना पड़ा। उनरे दत्तक पुत्र को अवैध घोषित कर उन्होंने झॉसी छोड़ने के लिए कहा। परंतु लक्ष्मीबाई ने साफ शब्दों में कहा, "मेरी झांसी नहीं दूँगी।"

लक्ष्मीबाई ने अपना सारा जीवन झॉसी को बचाने के लिए व्यतीत किया। अंग्रेजों के साथ उपकार घमासान युद्ध हुआ ।ग्वालियर में भी रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों से मुकाबला किया परंतु लड़ते- लड़ते व शहीद हो गई।

विजयालक्ष्मी पंडित एक संपन्न, कुलीन घराने से थी। सविनय आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें जेल में बंद किया गया था। वह एक पढ़ी- लिखी और प्रबुद्ध महिला थीं। और विदेशों में आयोजित विभिन्न संम्मेलनों में उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। भारत के राजनीतिक इतिहास में वह पहली महिला मंत्री थी। वह स्वतंत्र भारत की पहली महिला राजदूत थीं। जिन्होंने मास्को, लंदन और वॉशिंग्टन में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

अरुणा असफ अली हरियाणा के एक रूढ़ीवादी बंगाली परिवार से आने वाली अरुणा असफ अली ने परिवार और स्त्रीत्व के तमाम बंधनों को अस्वीकार करते हुए आजादी के जंग को अपनी कर्मभूमि माना। 1930 में नमक सत्याग्रह से उनके राजनीतिक संघर्ष की सुरुवात हुई थी । अंग्रेज शासन ने उन्हें एक साल के लिए जेल में कैद कर दिया था।

ऐतिहासिक भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 9 अगस्त 1942 को अरुणा असफ अली ने गोवालिया टैंक मैदान में राष्ट्रीय झंडा फहराकर आंदोलन में सक्रिय भाग लिया था। वह एक प्रबल राष्ट्रवादी और आंदोलनकर्मी थीं। उन्होंने लंबे समय तक भूमिगत रहकर भी काम किया। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की मासिक पत्रिका 'इन्कलाब' का भी संपादन किया। सरकारने उन्हें पकड़वाने के लिए 5,000 रु. का इनाम भी रखा था। 1998 में उन्हें भारत रत्न से सन्मानित किया गया।

सरोजनी नायडू भारत की कोकिला के नाम से परिचित है। वह केवल कवयित्री ही नहीं तो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थीं। गोपाल कृष्ण गोखले के साथ एक मुलाकात में वह प्रभावित हुई और उनके जीवन की दिशा ही बदल गई। सरोजनी नायडू ने खिलाफत आंदोलन की बागडोर संभाली।

सिस्टर निवेदिता का वास्तविक नाम मार्गरेट नोबल था। उस दौर में बहुत-सी विदेशी महिलाओं को हिंदुस्तान के व्यक्तित्वों और आजादी की लड़ाई ने प्रभावित किया था। स्वामी विवेकानंद के जीवन और दर्शन के प्रभाव में जनवरी 1898 हिंदुस्तान में आई। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा और उनके बौद्धिक उत्थान की जरुरत को महसूस किया और बड़े पैमाने मे पर काम भी किया। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में भी अग्रणी भूमिका निभाई।

इस प्रकार अहिल्याबाई होलकर, झलकारी बाई, दुर्गावती देवी, रानी वेलु नचियार, मॅडम भिकाजी कामा, उषा मेहता, लक्ष्मी सहगल, कस्तुरबा गांधी, कमला नेहरू, इंदिरा गांधी, सुचिता कृपलानी, कनकलता बरूआ आदि महिलाओंने भी अपने जान की परवाह न करते हुए स्वतंत्रता संग्राम में सहभाग लिया हैं।

अंतत: हम कह सकते है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में केवल पुरुषों की हिस्सेदारी नहीं हैं तो उनके साथ-साथ महिलाओं की भूमिका भी उल्लेखनीय हैं। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। इतिहास गवाह है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जहाँ पुरुषों ने बढ़- चढ़कर हिस्सा लिया तो महिलाएं भी पीछे नहीं रहीं। महिलाओं ने समय- समय पर अपनी बहादुरी और साहस का परिचय दिया हैं। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपना योगदान दिया हैं।

**संदर्भ:**

1.रानी चेन्नम्मा, श्याम सिंह शशि, नॅशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नई दिल्ली
2.कित्तूर रानी चेन्नम्मा, कृष्णाराय,आनंद बोर्ड, बंगलौर
3.http://www.ignited.in
4.m.hindi.webdunia.com
5. Inspira Research Association
https://www.inspirajournals.com

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com